ISSN: 2583-1453 SANCHAR SAROKAR July-September, 2021
www.sancharsarokar.in संचार सरोकार Vol.1, Issue 1
Page Nos. 30-40
Quarterly Peer Reviewed Bilingual Multidisciplinary Research e-Journal

महात्मा गाँधी और समकालीन सिनेमा का यथार्थ : मीडिया-प्रभाव विश्लेषण

संदीप कुमार दुबे*

*पीएचडी शोधार्थी जनसंचार, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र

सार :

शान्ति और अहिंसा की अवधारणा प्रकृति का मूल है। महात्मा गांधी जी ने जिस प्रकार सत्याग्रह, शान्ति व अहिंसा को अपने जीवन में उतारा, वैसा आज तक दूसरा कोई नहीं कर पाया है। अधिकारों को हासिल करने के लिए गांधी जी के अपनाए तरीकों जैसा उदाहरण विश्व इतिहास में कोई दूसरा नहीं है। महात्मा गांधी की आत्मकथा के साथ-साथ उनसे संबंधित तमाम सामग्रियों के अध्ययन से यह निष्कर्ष बहुत पहले आ चुका है कि उनका सिनेमा से विशेष लगाव नहीं था। संपूर्ण जीवनकाल में गांधी जी द्वारा केवल `रामराज्य' और हॉलीवुड की `मिशन टू मॉस्को' फिल्म देखे जाने का ही तथ्य सामने आता है। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में ज़िक्र किया है कि 'श्रवण पितृभक्ति' और राजा हरिश्चंद्र नामक नाटकों ने उन्हें बहुत प्रभावित किया था। एक साक्षात्कार में दादा साहब फाल्के ने भी माना था कि फ़िल्म के लिए राजा हरिश्चंद्र की कहानी उन्होंने इसलिए चुनी क्योंकि यह भारतीय जनमानस में बैठ चुकी कहानी थी। इसके पात्र भारतीय लोक जीवन में पहले से ही मौजूद थे। इन कहानियों और इनके पात्रों का भारतीय समाज पर बहुत व्यापक असर है। गांधी जी की जन्म और कर्म स्थली भारत और दुनिया के तमाम देशों की फिल्मों में गांधी मूल्यों का कितना प्रदर्शन हुआ है? यह जानना शोध पत्र का ध्येय है। यह देखना समीचीन होगा कि जब महात्मा गांधी सामाजिक और राजनीतिक रूप से सक्रिय थे, उस समय सिनेमा में किस प्रकार के कथ्य की प्रस्तुति की जा रही थी। प्रस्तुत शोधपत्र 'गांधी काल में सिनेमा का विकास 'में गांधी जी के सक्रियता काल में सिनेमा के विकास और सिनेमा पर गांधी के विचारों पर क्या प्रभाव पडा है? का उत्तर खोजने का प्रयास किया गया है। इसके लिए गांधी विचार साहित्य का अध्ययन और समकालीन सिनेमा का अवलोकन कर तथ्य जुटाए गए हैं। 1869 से 30 जनवरी 1948 तक के सिनेमा की कथावस्तु का अंर्तवस्तु विश्लेषण किया गया है।

Key Word: Mahatma Ghandhi, Gandhiyan Thought, World Cinema, Indian Cinema, Satya-Ahimsha, महात्मा गांधी, गांधी विचार, सत्य-अहिंसा, विश्व सिनेमा, भारतीय सिनेमा।

प्रस्तावना :

महात्मा गांधी की आत्मकथा के साथ-साथ उनसे संबंधित तमाम सामग्रियों के अध्ययन/अवलोकन में यह निष्कर्ष कई बार आ चुका है कि उन्होंने सिनेमा और नाटक को प्रथम दृष्टया स्वीकार नहीं किया था। उन्होंने अपनी कई प्रार्थना सभाओं और बातचीत में सिनेमा की आलोचना की है।[i, ii] महात्मा गाँधी ने अपनी जीवनी में अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह को सत्य या ईश्वर के तीन अंगों के रूप में देखा। वह सिनेमा और नाटक को ब्रह्मचर्य के लिए बाधक मानते हैं। वह लिखते हैं कि नाटक और सिनेमा दोनों मनुष्य को आचार-विचार में ईश्वर से दूर कर देता है।[iii] 1928 में इंडियन सिनेमैटोग्राफ कमेटी ने भारत के प्रभावशाली लोगों से मिलकर भारत में सिनेमा निर्माण सम्बंधी नीति के लिए फिल्मों से संबंधित एक सर्वेक्षण किया था।[iv] इसके लिए कमेटी ने गांधी जी को भी एक प्रश्नावली भेजी। गांधी जी ने एक पत्र के साथ इस प्रश्नावली को वापस करते हुए लिखा कि मैंने कभी सिनेमा देखा ही नहीं है लेकिन इसने जितना अहित किया है और कर रहा है वह प्रत्यक्ष है। यदि इसने किसी का भला किसी रूप में किया है तो इसका प्रमाण मिलना बाक़ी है।[v] सिनेमा के बारे में हरिजन पत्रिका में लिखा 'सिनेमा फ़िल्म ज़्यादातर बुरी होती हैं।' 10 मार्च 1929 को रंगून में मज़दूरों को सम्बोधित करते हुए सिनेमा को अफ़ीम बताते हुए इसे समाज के लिए हानिकारक बताया।[vi] एक बार उन्होंने सभी थिएटर और सिनेमा हाल बंद कर देने और ग्रामोफोन की बिक्री पर प्रतिबंध की भी हिमायत की।[vii] सिनेमा के बारे में लगातार नकारात्मक टिप्पणियों से आहत होकर फ़िल्म निर्माता-निर्देशक ख्वाजा अहमद अब्बास ने गांधी जी के नाम एक खुला पत्र लिखा। यह पत्र 'फ़िल्म इंडिया' पत्रिका के अक्टूबर 1939 के अंक में छपा। पत्र की वो प्रतिलिपि मुंबई स्थित भारतीय सिनेमा के राष्ट्रीय संग्रहालय में आज भी प्रदर्शित है। उन्होंने लिखा कि 'एक हाल के बयान में आपने सिनेमा को जुआँ, सट्टा, घुड़दौड़ आदि बुराइयों के साथ रखा है, जिससे आप जाति बहिष्कृत होने के डर से दूर रहते हैं। यह बयान किसी और ने दिए होते तो इससे चिंतित होने की ज़रूरत नहीं थी, आख़िर अपनी-अपनी पसंद का मामला है। बापू आप एक महान आत्मा है। आपके हृदय में पूर्वाग्रहों के लिए कोई जगह नहीं है। हमारे छोटे से खिलौने सिनेमा पर जो इतना अनुपयोगी नहीं है, जितना दिखता है, थोड़ा ध्यान दें और उदारतापूर्ण मुस्कान के साथ इसे अपना आशीर्वाद दें।' इस पत्र का गांधी जी ने कोई उत्तर दिया इसका प्रमाण नहीं मिलता है, पर सिनेमा को लेकर उनके विचार में कोई बदलाव नहीं आया। मुम्बई के एक अखबार ने भारतीय सिनेमा के 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर गांधी से संदेश देने की प्रार्थना की तब गांधी जी के सचिव ने उत्तर दिया कि बापू को सिनेमा में दिलचस्पी नहीं है और वे प्रशंसा का कोई पत्र नहीं देंगे।[viii] गांधी जी ने अपने पूरे जीवन में केवल दो फ़िल्म `रामराज्य' और हॉलीवुड की`मिशन टू मॉस्को' देखी।[ix] जबकि

वह लम्बे समय तक इंग्लैंड और अफ्रीका में रहे जहां ब्रिटिश सरकार ने सिनेमा को हमेशा बढ़ावा दिया। 1939 में गांधी जी ने फिल्म निर्माता-निर्देशक विजय भट्ट से गुजरात के कवि-संत नरसी मेहता के जीवन पर फिल्म बनाने को कहा था। गांधी जी की इच्छा का सम्मान करते हुए विजय ने `नरसी भगत' बनाई जिसे 1940 में रिलीज किया गया। माना जाता है कि अतिव्यस्तता के चलते गांधी जी ये फिल्म नहीं देख सके। तीन साल बाद, 1943 में विजय भट्ट ने ही पौराणिक कथाओं पर आधारित एक और फिल्म `रामराज्य' बनाई, जिसे 1944 में विशेष प्रदर्शन करके गांधी जी को दिखाया गया। जोसेफ ई डेविस के1941 में लिखे गए उपन्यास 'मिशन टु मॉस्को' पर इसी नाम से माइकल कर्टज ने फ़िल्म बनाई। यह 1943 में रिलीज़ हुई। ऐसा माना जाता है की इस फ़िल्म को भी गांधी जी ने देखा था। जब महात्मा गांधी सामाजिक और राजनीतिक रूप से सक्रिय थे तो उस समय विश्व भर में सिनेमा का निर्माण तेज़ी से हो रहा था। भारत में भी सिनेमा को लेकर लोगों में दिलचस्पी थी।

गांधी काल और सिनेमा का विकास

महात्मा गांधी नाटक और सिनेमा के कटु आलोचक है, पर गांधी के 'गांधी' बनने की प्रक्रिया में नाटकों और चलते-फिरते चित्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने आत्मकथा में ज़िक्र किया है कि 'श्रवण पितृभक्ति' और 'राजा हरिश्चंद्र' नाटकों ने उन्हें बहुत प्रभावित किया था। वह आत्मकथा के बचपन के खंड में लिखते हैं की 'उन्हीं दिनों शीशे में चित्र दिखानेवाले भी घर-घर आते थे। उनके पास मैंने श्रवण का वह दृश्य भी देखा, जिसमें वह अपने माता-पिता को काँवर में बैठाकर यात्रा पर ले जाता है। दोनों चीजों का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा। मन में इच्छा होती कि मुझे भी श्रवण के समान बनना चाहिए। श्रवण की मृत्यु पर उसके माता-पिता का विलाप मुझे आज भी याद है। उस ललित छंद को मैंने बाजे पर बजाना भी सीख लिया था। मुझे बाजा सीखने का शौक था और पिताजी ने एक बाजा दिला भी दिया था।'[x] यह 1875-80 के आसपास की बात है और स्थान है पोरबंदर। भारत के बाहर 'शीशे में चित्र दिखाने' की तरह ही तस्वीरों को गतिमान दिखाने की तकनीक के प्रमाण इसके बाद मिलते हैं। 1874 में फ़्रांस के खगोल विज्ञानी पियरे जानसन (Pierre Janssen) ने शुक्र ग्रह के सूर्य के चक्कर लगाने की तस्वीरों को खींचने के लिए 'फोटोग्राफिक रिवॉल्वर' (photographic revolver) का प्रयोग किया था। 1877 में फ़्रान्स के ही चार्ल्स एमली रेयोंड (Charles-Émile Reynaud) ने एक ऐसा उपकरण बनाया जिसके केंद्र में शीशा लगा था और उसके सामने के हिस्से पर चित्र बनाए गए थे। इसे Praxinoscope या Zoetrope कहा गया। चार्ल्स एमली ने ही 1879 में इस तकनीक को विकसित करके थियेटर में चित्र दिखाने का उपकरण (Théâtre Optique) बनाया। वही 1878 में एड्वर्ड मेब्रिड (Eadweard Muybridge) ने 12 तस्वीरों के ज़रिए घोड़ों के दौड़ने का बिम्ब प्रदर्शित किया। इसके लिए 12 कैमरों का इस्तेमाल किया गया था। इन से खिंची तस्वीरों को Zoopraxiscope के ज़रिए चलते-फिरते प्रदर्शित किया गया। 1879 में George Eastman ने तस्वीरों को व्यापक पैमाने

पर प्रदर्शित करने के लिए फ़ोटोग्राफ़िक ड्राई प्लेट की खोज की। ईस्टमन ने ही 1888 में फ़िल्म रोल बनाने की कम्पनी कोडैक (Eastman Kodak Company) की स्थापना की। 1882 में फ़्रान्स के ईताने ज़ुल्स मरे (Étienne-Jules Marey) ने एक उपकरण (Chronophotographic Gun) बनाया जिससे एक सेकेंड में बारह चित्र दिखाए जा सकते थे। उपरोक्त घटनाएं स्पष्ट करती हैं की जब गांधी जी का व्यक्तित्व आकार ले रहा था उसी समय फ़ोटोग्राफ़ी और चलचित्र का भी तेजी से विकास हो रहा था । गांधी जी के बचपन की तस्वीर भी कई संग्रहालयों में प्रदर्शित हैं, यश फ़ोटोग्राफ़ी की विधा से उनके प्राथमिक साक्षात्कार का प्रमाण भी हैं।

गांधी जी इंग्लैंड प्रवास के बारे में अपनी आत्मकथा के 14वें अध्याय में लिखते हैं की वह 'डेली न्यूज', 'डेली टेलीग्राफ' और 'पेलमेल गजेट' इन पत्रों को सरसरी निगाह से देख जाते थे। पर शुरू-शुरू में तो इसमें मुश्किल से एक घंटा खर्च होता होगा।' वहाँ के इन अख़बारों में फ़िल्म प्रदर्शन के इश्तहार भी छपते थे। यह 1888-89 का समय था। इस समय गांधी जी युनिवर्सिटी कालेज, लंदन में पढ़ रहे और फोटोग्राफ़ी के पितामह माने जाने वाले फ़्रांस के लुइस ली प्रिन्स (Louis Aimé Augustin Le Prince) ने इंग्लैंड के लीड्स, पश्चिमी यार्कशायर में 'Roundhay Garden Scene' नाम से लघु मूक फ़िल्म बनाई थी। इसे दुनिया की सबसे पुरानी उपलब्ध फ़िल्म कहा जाता है। इसी साल अमेरिका के जार्ज ईस्टमैन ने फ़ोटोग्राफ़िक फ़िल्म के लिए पेटेंट हासिल कर लिया था और थामस एल्वा एडिसन, एडवर्ड मेब्रीज़ के साथ सिनेमा में ध्वनि को जोड़ने की तकनीक पर प्रयोग शुरू कर चुके थे। यह सब वहाँ के समचार पत्रों में लगातार प्रकाशित हो रहा था। ऐसे में यह कहा जा सकता है की वह सिनेमासे परिचित रहे होंगे। लेकिन ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता की उन्होंने इंग्लैंड में पढ़ाई के दौरान कोई सिनेमा देखा। 1888 की मई और अक्तूबर के बीच किसी समय पेरिस की प्रदर्शनी देखने गए।यह वो दौर था जब गांधीजी खान-पान रहन-सहन को लेकर तमाम प्रयोग कर रहे थे और सिनेमा में तकनीकी विकास के लिए प्रयोग हो रहे थे।19वीं सदी बीतते-बीतते फोटोग्राफ़ी की तकनीक विकसित होकर सिनेमा में बदल चुकी थी और उसमें तकनीकी सुधार लगातार जारी थे।

1891 में गांधीजी अपनी क़ानून की पढ़ाई पूरी करके वापस हिंदुस्तान आते हैं और 1893 में वह कठियावाड व्यापारी अब्दुल्ला के मुक़दमे के लिए अफ़्रीका पहुँचते हैं, जहां नस्लवाद के ख़िलाफ़ उनके संघर्ष की शुरुआत होती है। यह संघर्ष 21 वर्षों तक चलता है और गांधी जी कई बार भारत से अफ्रीका आते-जाते हैं। जब गांधी जी अफ़्रीका में नस्लवाद के ख़िलाफ़ जनमत तैयार कर रहे थे उसी समय 20 मई 1894 को थामस एल्वा एडिसन ने 'काइनेटोग्राफ' के ज़रिए अमेरिका में पहली बार फ़िल्म का प्रदर्शन किया। जर्मनी के मैक्स स्कैलाडनोवस्की ने नवंबर 1895 में फ़िल्म प्रोजेक्टर और बाइस्कोप की खोज की थी। उसी समय फ़्रांस और अमेरिका में भी सिनेमा की शुरुआत हो रही थी।1896 में फ़िल्म उपकरण और रिकार्ड बेचने वाली कम्पनी Pathé-Frères की स्थापना हुई। इसी कम्पनी की ब्रिटेन की शाखा ने

महात्मा गांधी की कई यात्राओं और भाषणों की रिकार्डिंग की थी।

जब गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में संघर्षरत थे उसी समय भारत में सबसे पहला सिनेमा शो, 7 जुलाई, 1896 में बॉम्बे के वाटसन होटल में ऑगस्ट और लुइस ल्यूमिरे ने दिखाया। जब भारत में ये शो चल रहा था उस समय गांधी जी डरबन से कलकत्ता पहुँचे थे और इलाहबाद होते हुए मुंबई के लिए रवाना हो रहे थे। 1897 में प्रोफेसर स्टीवेंसन ने पहले बॉयोस्कोप का प्रदर्शन कलकत्ता के स्टार थिएटर में किया था। स्टीवेंसन के इस शो की शूटिंग कर हीरालाल सेन ने 'फ्लॉवर ऑफ़ पर्शिया' बनाई जिसे 1898 में प्रदर्शित किया गया। इसी तरह मुंबई के हैंगिंग गार्डन में एक कुश्ती मैच की शूटिंग कर एचएस भटवडेकर ने 1899 में 'द रेस्लर्स' बनाई। एक प्रकार से यह वृत्तचित्र का शुरुआती दौर भी था। 1900 में गांधी जी की बोयर युद्ध के दौरान स्वयं सेवकों के साथ की तस्वीर आज इतिहास का हिस्सा है। इसी साल जार्ज मेलाइस ने पहली रंगीन फ़िल्म 'जॉन आफ आर्क' (Jeanne d'Arc) बनाई थी। यह मूक फ़िल्म 10 मिनट अवधि की थी। नटाल-जुलु युद्ध (1906) के दौरान स्वयं सेवक के रूप में गांधी जी की तस्वीर यह स्पष्ट करती है कि वह समय-समय पर वह कैमरे के सामने भी उपस्थित रहे हैं। दादासाहेब तोरणे के द्वारा विदेशी कैमरामैन की मदद से बनाई फ़िल्म 'श्री पुण्डलीक' 18 मई, 1912 को पहली बार थिएटर में प्रदर्शित किया गया। यह फ़िल्म केवल एक नाटक की शूटिंग भर थी और इसके नेगेटिव को देश के बाहर प्रॉसेस किया गया था इसलिए इसे पहली भारतीय फ़िल्म का दर्जा नहीं दिया जाता। जब यह फ़िल्म दिखाई गयी तो गांधी जी अफ्रीका ट्रांसवाल में प्रवासियों के अधिकार के लिए संघर्षरत थे। आधिकारिक तौर पर पहली भारतीय फ़िल्म 'राजा हरिश्चंद्र' का प्रदर्शन 3 मई, 1913 को बांबे (मुंबई) में हुआ था। इस फ़िल्म का प्रदर्शन लंदन में भी हुआ था। इस प्रकार यह पहली भारतीय फ़िल्म थी जो देश के बाहर प्रदर्शित की गई। जब भारत में पहली फ़िल्म प्रदर्शित की जा रही थी गांधी जी जोहानसबर्ग में प्रवासियों के अधिकार के लिए संघर्षरत थे।

गोपाल कृष्ण गोखले और रविंद्रनाथ टैगोर के बुलावे पर 1915 में दक्षिण अफ़्रीका से वापसी के बाद वह भारत में घूमते रहे। इसके बाद 1917 में चंपारन सत्याग्रह और 1918 में खेड़ा आंदोलन नेतृत्व किया। यह वो दौर था जब दुनिया पहले विश्व युद्ध में उलझ चुकी थी। इस दौर में संचार तकनीक का प्रयोग बढ़ा और नए अनुसंधान हुए। रेडियो और सिनेमा की तकनीक का प्रयोग सूचना के प्रसारण और प्रॉपगैंडा के लिए ख़ूब हुआ। न्यूज़ रील के रूप में सिनेमा घरों में युद्ध के मोर्चों की फ़िल्में दिखाई जाने लगीं थीं। इस दौर में सिनेमा के ज़रिए कहानी कहने की विधा लगातार परिष्कृत हुई और सिनेमा की संख्या में लगातार वृद्धि होती गई। फ़िल्मों की समय अवधि में भी विस्तार होने लगा। प्रथम विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद भारत में स्वतंत्रता की माँग तेज होने लगी। ब्रिटिश सरकार आज़ादी के आंदोलन को दबाने के लिए तरह-तरह के क़ानून ला रही थी। ऐसे ही एक क़ानून रौलेट एक्ट के विरोध में देश भर में सभाएँ हो रही थीं। इसी के विरोध में 31 अप्रैल 1919 को जलियाँवाला बाग में जुटी भीड़ का नरसंहार कर दिया गया। इससे लोग अंग्रेज़ी सत्ता के ख़िलाफ़ उग्र हो उठे। अगस्त 1920 में गांधी जी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया। ब्रिटिश सरकार ने सितंबर,

1917 में सिनेमा का विधेयक पेश किया जो अगस्त, 1920 में ही कानून बना। जिसके बाद बम्बई, मद्रास और कलकत्ता में सेंसर बोर्ड बने। इस क़ानून ने भारत में सिनेमा को सरकारी नियंत्रण में रखने की कोशिश की। भारत में सिनेमा के सरकार विरोधी रुख़ के कारण ब्रिटिश सरकार ने यह क़ानून बनाया था। इसी साल 1920 में पहली बार बाबुराव पेंटर ने अपनी फिल्म 'वत्सला हरण'का प्रचार सिनेमा पोस्टर्स से किया था।[xi] इसके बाद से ही फ़िल्म प्रचार के लिए पोस्टर का प्रचलन शुरू हुआ। इससे पहले केवल अख़बारों में इश्तहार छपते थे। पहला इश्तहार 'पुण्डलीक' का था जो25 मई, 1912 को टाइम्स आफ इंडिया में छपा था। यह वो समय था जब गांधी जी अफ्रीका में प्रवासियों को उनका हक़ दिलाने के लिए ब्रिटिश सरकार से मोर्चा ले रहे थे। वह समचार पत्रों को लगातार अपने विचारों से अवगत कराते रहते थे।

1929 में प्रदर्शित फ़िल्म 'भक्त विदुर' को अंग्रेज़ी शासन ने प्रतिबंधित करते हुए कहा कि फ़िल्म का नायक विदुर नहीं बल्कि गांधी हैं। फ़िल्म में द्वारकानाथ संपत ने विदुर की भूमिका निभाई थी उन्होंने बाद में एक संस्मरण में लिखा कि दर्शकों को भले ही नहीं बताया गया है कि विदुर में गांधी की छवि है लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों ने अनुमान लगा लिया था। वी शांताराम को अपनी फ़िल्म 'महात्मा' का शीर्षक बदलकर धर्मात्मा करना पड़ा था।[xii] ब्रिटिश शिक्षा तंत्र को दर्शाती 'वंदेमातरम् आश्रम' फिल्म 1927 में आयी। सरकार ने उस पर भी प्रतिबंध लगा दिया।12 मार्च 1930 को 24 दिनों की डांडी यात्रा के साथ नामक सत्याग्रह शुरू हुआ। इन सबके चलते गांधी दुनिया भर में चिर परिचित नेता के रूप में स्थापित हो गए। 1931 में फिल्म 'स्वराज' में अंग्रेजी राज तथा गांधी जी के हिंद स्वराज्य की कल्पना को आधार बनाया गया था।[xiii] द गोएलम (The Golem, 1920), लास्ट लाफ (Last Laugh, 1924), मेट्रोपोलिश (Metropolis, 1927) आदि हालीवुड फ़िल्मों के कथ्य में उन सामाजिक चुनौतियों का प्रदर्शन था जिसकी बात गांधी जी दक्षिण अफ़्रीका से ही करते आए थे।1930 के दशक में भारतीय सिनेमा में ध्वनि तकनीक के आने से 'इंद्र सभा' और 'देवी देवयानी' जैसी संगीत प्रधान फिल्मों के ज़रिए पर्दे पर नाच-गाने का प्रदर्शन प्रारंभ हुआ। इस तरह के नाच-गाने के ख़िलाफ़ होने के कारण ही वह सिनेमा से दूर होते गये। फिल्म निर्माता आरएसडी चौधरी ने 1930 में 'व्रथ' फ़िल्म बनाई। इसमें भारतीय राजनीति और नेताओं की सक्रियता का चित्रण किया गया था। जिसके कारण ब्रिटिश सरकार ने इसे भारत में प्रतिबंधित कर दिया था। 14 मार्च 1931 को भारत की पहली सवाक फिल्म 'आलम आरा' बनी जिसे आर्देशिर ईरानी ने निर्देशित किया था। 31 अक्टूबर 1931 को एच.एम. रेड्डी द्वारा निर्देशित तमिल फिल्म 'कालिदास' प्रदर्शित हुई। यह दक्षिण भारत की पहली बोलती फिल्म थी। इस फ़िल्म में गांधी पर आधारित एक गीत भी था।

गांधी और चार्ली चैप्लिन की मुलाक़ात

1930 का दशक वो समय था, जब सिनेमा मूक से बोलने की तरफ बढ़ चुका था। दुनिया को पहली बोलती फिल्म 'द जैज सिंगर' के रूप में 6 अक्तूबर 1927 को मिल चुकी थी। मूक सिनेमा की दुनिया के बड़े कलाकार चार्ली चैप्लिन सवाक फिल्म में भी

आने लगे थे। 'अगर मुझमें सेंस ऑफ ह्यूमर न रहता तो मैं कबका खुदकुशी कर लेता' महात्मा गांधी के इस वाक्य का मंतव्य सिनेमा के पर्दे पर प्रदर्शित करने वाले चार्ली चैप्लिन गांधी से मिलने के लिए बेकरार थे। चार्ली चैप्लिन और गांधी जी की ऐतिहासिक मुलाक़ात तब हुई जब गांधी जी 1931 को दूसरे गोलमेज सम्मेलन में शामिल होने के लिए लंदन पहुंचे। दक्षिण अफ्रीका से हिंदुस्तान लौटने के बाद वो पहली बार विदेशी दौरे पर थे। उधर चार्ली चैप्लिन दुनिया में अपने अनूठे अभिनय के दम पर प्रसिद्ध हो चुके थे। वे राजनीतिक लोगों से मिलने और राजनीति की चर्चा में भी दिलचस्पी लेते थे। वह अपनी फिल्म `सिटीलाइट्स' के प्रमोशन के लिए लंदन आए थे।[xiv] लंदन में गांधीजी किसी होटल में न रुक कर पूर्वी लंदन के पिछड़े इलाके में सामुदायिक किंग्सली हॉल (अब गांधी फाउंडेशन) के एक छोटे-से कमरे में ठहरे। लंदन की ठंड में भी वह सूती धोती, दुशाला और चप्पल पहनते हुए तीन महीने रहे। चैप्लिन ने मुलाक़ात के लिए गांधीजी को पोस्टकार्ड लिखा। डाक मिलने पर गांधीजी ने अपनी मेजबान मुरिएल लेस्टर से चार्ली चैप्लिन के बारे में पूछा। दरअसल गांधी सिनेमा को पसंद नहीं करते थे और उन्हें फिल्मी सितारों के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं थी। तब मुरिएल लेस्टर ने उन्हें बताया की राजनीति में आपका और कला की दुनिया में चैप्लिन का रास्ता एक ही है। गांधीजी ने चैप्लिन को 22 सितंबर, 1931 की शाम को कैनिंग टाउन में डॉक्टर चुन्नीलाल कतियाल के यहाँ मुलाक़ात के लिए बुलाया। गांधीजी से मुलाकात का दिलचस्प जिक्र चैप्लिन ने अपनी आत्मकथा में विस्तार से किया है। चैप्लिन के शब्दों में 'अंततः जब वे (गांधी) पहुंचे और अपने पहनावे की तहें संभालते हुए टैक्सी से उतरे तो स्वागत में भारी जयकारे गूंज उठे। उस छोटी तंग गरीब बस्ती (स्लम) में क्या अजब दृश्य था जब एक बाहरी शख्स एक छोटे-से घर में जन-समुदाय के जय-घोष के बीच दाखिल हो रहा था। 'गांधीजी चैप्लिन की ओर देख रहे थे। चैप्लिन लिखते हैं कि गांधीजी से तो मैं उम्मीद नहीं कर सकता था कि वे मेरी किसी फिल्म पर बात शुरू करेंगे और कहेंगे कि बड़ा मजा आया; 'मुझे नहीं लगता था कि उन्होंने कभी कोई फिल्म देखी भी होगी। सो चैप्लिन ने अपना गला साफ किया और कहा कि मैं स्वाधीनता के लिए भारत के संघर्ष के साथ हूं, पर आप मशीनों के खिलाफ क्यों हैं, उनसे तो दासता से मुक्ति मिलती है, काम जल्दी होता है और मनुष्य सुखी रहता है? इस पर गांधीजी ने मुस्कुराते हुए शांत स्वर में कहा- आप ठीक कहते हैं, मगर हमें पहले अंग्रेजी राज से मुक्ति चाहिए। मशीनों के चलते हमें इंग्लैंड पर आश्रित होना पड़ा और इससे बाहर निकलने के लिए एक ही उपाय है कि हम मशीनरी से बनी चीज़ों को बायकॉट करना शुरू कर दें।[xv] गांधीजी के विचारों से प्रभावित होकर ही चार्ली चैप्लिन ने 1936 में `मॉडर्न टाइम्स' फिल्म बनाई और इसमें मशीनीकरण से होने वाले नुकसान को प्रदर्शित किया।

1932 में 'नरसी मेहता' के साथ गुजराती फिल्म उद्योग की शुरुआत हुई। 1934 में हिमांशु राय, देविका रानी और राजनारायण दुबे ने उद्योगपति एफ ई दीनशॉ, सर फ़िरोज़ सेठना के साथ मिल कर बॉम्बे टॉकीज़ स्टूडियो शुरू किया था। इसी बांबे टाकीज ने जातीय भेदभाव पर आधारित अशोक कुमार और देविका रानी को लेकर 1936 'अछूत कन्या' बनाई। यह वही दौर था जब गांधी जी

छुआछूत और जातीय भेदभाव के खिलाफ 1933 से हरिजन अख़बार निकाल रहे थे इसी साल 'हरिजन' फ़िल्म भी आई। रुपकोंवर ज्योतिप्रसाद अग्रवाल ने चित्रकला मूवीटोन के बैनर से 1935 में पहली असमिया फिल्म 'जोयमती' का निर्माण किया। इसी साल प्रेम पर आधारित प्रसिद्ध फ़िल्म 'देवदास' भी आई। 1936 में नितिन बोस के निर्देशन में 'धरती मां' बनी जिसमें राष्ट्रीय एकता का चित्रण हुआ था। भारत में जब गांधी जी अंग्रेजों के ख़िलाफ़ अहिंसात्मक आंदोलन चला रहे थे तो भारत में बहुभाषी सिनेमा बनना शुरू हो गया था। 1936 में सुन्दर देब गोस्वामी ने पहली उड़िया बोलती यानी टॉकीज फिल्म 'सीता बिबाह' का निर्माण किया था। 1936 में ही बनी 'संत तुकाराम' को 1937 के 'वेनिस फिल्म समारोह' में प्रदर्शित किया गया। यह किसी अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में दिखाई गई पहली फिल्म थी। इसी समारोह में कलकत्ता में बनी ईस्ट इंडिया फिल्म कंपनी की पहली भारतीय फिल्म 'सावित्री' को साम्मनित किया गया। 1937 में बनी 'किसन कन्हैया' भारत की पहली रंगीन फिल्म थी। इसी वर्ष बंगाल सरकार ने बंगाल फ़िल्म पत्रकार एसोशिएसन पुरस्कार की स्थापना की। फ़िल्म के क्षेत्र में दिया जाने वाला यह पहला पुरस्कार था। 1938 में एक फिल्म आयी इसमें गांधी, नेहरू तथा चरखा का चित्रण हुआ था। 1938 में गुडावल्ली रामाब्रह्मम द्वारा निर्देशित 'रायथू बिड्डा' को ब्रिटिश शासन द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया था। इस फ़िल्म में गांधी जी के चंपारण सत्याग्रह का प्रभाव दिखता है। इस फ़िल्म में किसानों द्वारा ज़मींदार के विरूद्ध विद्रोह दिखाया गया था। इसी साल मूलतः चीन के निवासी ए.के. चट्टीअर ने गांधी जी के फोटो और फिल्मों को एकत्र करने के लिए भारत यात्रा की। इस संग्रह के आधार पर उन्होंने गांधी जी पर 81 मिनट की डॉक्यूमेंट्री '20वीं सदी का पैगंबर-महात्मा गांधी' (Mahatma Gandhi -20th century prophet) बनाई जो 15 अगस्त 1947 को दिल्ली में प्रदर्शित हुई। इस फ़िल्म को गांधी के निधन के पाँच साल बाद अंग्रेज़ी में अनूदित कर अमेरिका में दिखाया गया। 1939 में जार्ज स्टिवेनसन निर्देशित फ़िल्म गूँगा दिन (Gunga Din) में कैरी ग्रांट, विक्टर मकलेन (Victor McLaglen) और डग्लस फेयरबैंक्स जूनियर (Douglas Fairbanks Jr) ने अभिनय किया था।इस फ़िल्म मेंएक पात्र की वेशभूषा गांधीजी से मिलती-जुलती थी। जिसकी हत्या कर दी जाती है।[xvi] 1940 में वाई.वी. राव निर्देशित 'विश्व मोहिनी' भारतीय फिल्म की दुनिया दिखाने वाली पहली फिल्म थी। 1946 में चेतन आनंद की फिल्म 'नीचा नगर' को पहली बार अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। यह फ़िल्म भी संसाधनों पर क़ब्ज़े के प्रतिरोध में बनाई गयी थी।

गांधी जी सिनेमा को लेकर आशंकित रहे और समय समय पर अपना विरोध दर्ज कराते रहे। 5 अप्रैल 42 को न्यू साउथ वेल्स के पूर्व प्रधानमंत्री सर बर्टरम स्टेवेंस से दिल्ली में हुई बातचीत को हरिजन के 3 मई 1942 के अंक में प्रकाशित किया गया था। इस बातचीत में गांधी जी ने सिनेमा को अनुचित बताया था।

27 मई 1947 को सोशलिस्ट जयप्रकाश नारायण और उनके कार्यकर्ताओं से मशीनीकरण के विरोध पर पूछे सवाल के जवाब में गांधी ने कहा 'Why do you need a cinema here? Instead of this, you can perform the various plays and stage dramas known to us. The cinema will only make you spend money. Then you will also learn to gamble and fall into other evil habits. Those addicted to alcohol, ganja and bhang should give up these addictions.[xvii]

गांधी ने एक जनवरी 1948 को दिल्ली में अपनी प्रार्थना सभा में कहा 'I would advise the Government to close down liquor shops and to replace them by eating-houses where people could get pure and light food. Here they should distribute books from which people could learn something and they should provide to them some harmless entertainment. But there should be no place for cinema. This will help people to give up alcohol. I say this from my experience of many countries.'[xviii]

फ़िल्म इंडस्ट्री के विरोध के संदर्भ में उन्होंने कहा, 'My reputation will not suffer by misrepresentations. It certainly will when I am guilty of misconduct. No whitewashing will then save it. But today my withers are unwring even though a German friend tells me that a German paper accuses me of having promoted a film company. The innocent writer does not know that I have never once been to a cinema and refuse to be enthused about it and waste God-given time in spite of pressure sometimes used by kind friends. They tell me it has an educational value. It is possible that it has. But its corrupting influence obtrudes itself upon me every day. Education, therefore, I seek elsewhere.'[xix]

जहां एक ओर गांधी जी सिनेमा की बुराइयों को देख रहे थे वहीं दूसरी ओर देश के दूसरे नेता सिनेमा को लेकर उत्साहित थे। सिनेमा के बारे में गांधी जी के ठीक विपरीत रबीन्द्रनाथ ठाकुर का मत था की सिनेमा को साहित्य से इतर अपनी स्वायत्त धारा बनानी चाहिए। उन्होंने 1932 में 'नातिर पूजा 'फिल्म का निर्देशन भी किया। इसी साल उन्होंने कोलकाता में एक सिनेमाघर के उद्घाटन के लिए एक कविता भी लिखी। 'फिल्म इंडिया' ने 1942 में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी का एक साक्षात्कार छापा था। इसमें उन्होंने पौराणिक फिल्मों की गुणवत्ता से असंतोष जाहिर किया और

सनसनी-सतहीपन से बचने की सलाह दी। उन्होंने उम्मीद जाहिर की थी कि सिनेमा अपने अनुभवों से सीखकर बेहतर होने की ओर अग्रसर होगा। फिल्मी पत्रिकाओं की स्पष्ट आलोचनाओं की भी उन्होंने सराहना की थी, पर समीक्षकों को भी उदार और प्रेरक होने की सलाह भी दी थी। किसी फिल्म के बारे में सरदार पटेल ने 1942 में एक साक्षात्कार में यह कहा की आजादी मिलने के बाद उस फिल्म में कांग्रेस के विघटन का भी दृश्य जोड़ दिया जाए, जैसा कि गांधी की राय थी कि आजादी के बाद कांग्रेस को समाप्त कर दिया जाना चाहिए। सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था कि हमें अपने प्राचीन आदर्श बनाये रखने चाहिए, पर उसके आधुनिक लोगों के जीवन के साथ साम्य को भी रेखांकित करने और आम लोगों के रोजमर्रा जीवन और उनकी समस्याओं पर ध्यान देने की सलाह दी थी।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं की महात्मा गांधी के जीवन काल में ही पूरी दुनिया में सिनेमा काफ़ी विकसित हो चुका था और भारत में भी ये संपन्न हो रहा था। गांधी काल में सिनेमा ने ना केवल तकनीकी बल्कि कथानक के तौर पर भी मज़बूती से विकास किया। 1900 से 1947 तक का समय न केवल विश्व सिनेमा बल्कि भारतीय सिनेमा के लिए स्वर्णिम काल रहा। इस काल में सिनेमा न सिर्फ़ स्थापित हुआ बल्कि उसने आम जन को सम्मोहित भी कर लिया। जिसके फलस्वरूप वो सभी ख़तरे सामने आने लगे है, जिनकी आशंका के कारण गांधी जी सिनेमा का विरोध कर रहे थे। सिनेमा ने गांधी के विचारों की प्रासंगिकता को बनाए रखने में भी मदद की और गांधी को उस पीढ़ी के सामने रखा जिसने उन्हें नहीं देखा था। पर यह सब बहुत सीमित दायरे में हुआ। जैसे-जैसे विश्व हिंसा, आर्थिक मंदी, पर्यावरण प्रदूषण, भूख, बेरोजगारी और नफरत जैसे तमाम हालात में उलझता जा रहा है, वैसे-वैसे दुनिया को न केवल गांधी याद आ रहे हैं बल्कि गांधीदर्शन को आत्मसात करने की आवश्यकता भी बड़ी शिद्दत से महसूस की जाने लगी है। यह आवश्यकता भारत सहित विश्व सिनेमा में भी महसूस की जा रही है।

संदर्भ :

1. [1] ed. (1970). The Collected Works of Mahatma Gandhi Vol 33 (1929). New Delhi: Publication Division. p16
2. [1] ed. (1970). The Collected Works of Mahatma Gandhi Vol 33 (1929). New Delhi: Publication Division. p185
3. [1] गांधी, मोहनदास करमचंद। (2007)। सत्य के साथ मेरे प्रयोग। अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन मंदिर।
4. [1] ब्रह्मात्मज अजय. (2018, December 23). "पानीपत पर कोई फिल्म बने इसमें मराठों को दिक्कत नहीं होनी चाहिए". Retrieved February 10, 2020, from https://www.newslaundry.com/2018/12/23/dada-saheb-phalke-mumbai-film-industry-indian
5. [1] ब्रम्हात्मज, अजय। (2019)। हिंदी है दिल हमारा। कोलकाता: हिंदी निगरानी संस्था। पृष्ठ ३१
6. [1] ed. (1970). The Collected Works of Mahatma Gandhi XL (1929). New Delhi: Publication Division. p125

7. [1] ed. (1970). The Collected Works of Mahatma Gandhi XL (1929). New Delhi: Publication Division. p125
8. [1] के रे प्रकाश. (2019, January 9). आजादी के नेता और सिनेमा. Retrieved February 16, 2020, from https://yugwarta.com/cinema/आजादी-के-नेता-और-सिनेमा/
9. [1] इस 'कॉमेडी किंग' से मिले थे महात्मा गांधी, पूरी जिंदगी में देखी थी सिर्फ ये 2 फिल्में. (2017, October 2). Retrieved February 0, n.d., from https://www.bhaskar.com/news/ENT-BNE-mahatma-gandi-met-with-charlie-chaplin-5710267-PHO.html?sld_seq=1
10. [1] गांधी, मोहनदास करमचंद। (2007)। सत्य के साथ मेरे प्रयोग। अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन मंदिर।
11. [1] भारतीय सिनेमा का इतिहास की जानकारी हिंदी में. (2018, July 30). Retrieved February 20, 2020, from https://www.hindigyanbook.com/bhartiya-cinema-ka-ithihas-ki-jankari-hindi-me/
12. [1] ब्रह्मात्मज अजय. (2019, September 30). फिल्मों में गांधी की छवि और विचार. Retrieved February 18, 2020, from https://www.navjivanindia.com/cinema/image-of-gandhi-and-his-ideas-in-films
13. [1] चतुर्वेदी डॉ. मनोज. (2012, December 15). महात्मा गांधी और सिनेमा -डॉ. मनोज चतुर्वेदी - Pravakta.Com: प्रवक्ता.कॉम. Retrieved February 19, 2020, from https://www.pravakta.com/mahatma-gandhi-and-cinema-dr-manoj-chaturvedi/
14. [1] थानवी ओम. (2018, October 2). जब चार्ली चैप्लिन मिलने पहुंचे गांधी से. Retrieved February 0, n.d., from http://thewirehindi.com/59462/when-mahatma-gandhi-met-charlie-chaplin/
15. [1] महात्मा के साथ मुलाकात के बाद चार्ली चैपलिन ने ऐसे की थी गांधीगीरी. (n.d., October 0). Retrieved February 0, 0AD, from https://hindi.news18.com/news/knowledge/know-about-historic-meeting-between-mahatma-gandhi-and-charlie-chaplin-2493652.html
16. [1] Bhatiya, U. (2018, January 27). The Mahatma and the movies. Retrieved February 18, 2020, from https://www.livemint.com/
17. [1] ed. (1970). The Collected Works of Mahatma Gandhi Vol 90 (1929). New Delhi: Publication Division. p305
18. [1] ed. (1970). The Collected Works of Mahatma Gandhi Vol 90 (1929). New Delhi: Publication Division. p340
19. [1] ed. (1970). The Collected Works of Mahatma Gandhi Vol 32 (1929). New Delhi: Publication Division. p84